DOCUMENT METADATA FOR INTERNET ARCHIVE (ARCHIVE.ORG)

Title: The Battle of Bhutala (1227 AD) & The Strategic Birth of Chittorgarh

Author: Dr. Govind Malviya (Real Hi(story))

Date of Archiving: August 14, 2026

Subject / Keywords: Mewar History, Rawal Jaitrasimha, Iltutmish, Battle of Bhutala, Chirwa Inscription (1273 AD), Hammiramadamardana, Epigraphy, Rajasthan Medieval History, Military Strategy.

Language: Hindi & English (Bilingual Research Document)

Document Type: Monograph / Epigraphic Analysis Paper

Identifier / Publisher: Real Hi(story) Digital Archives

भूताला का युद्ध (1227 ई.) एवं चित्तौड़गढ़ का राजधानी के रूप में उदय: प्राथमिक अभिलेखीय शोध पत्र

🖋 कार्यकारी सारांश (Executive Summary)

मुख्यधारा के इतिहास और प्रतियोगी परीक्षाओं की संदर्भ पुस्तकों में मेवाड़ की राजधानी के रूप में चित्तौड़गढ़ के चयन को अक्सर एक सामान्य प्रशासनिक निर्णय के रूप में दर्शाया जाता है। हालांकि, समकालीन प्राथमिक अभिलेखों और पांडुलिपियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि चित्तौड़गढ़ का राजधानी बनना 1227 ई. में दिल्ली सल्तनत के सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमish द्वारा मेवाड़ की प्राचीन राजधानी **नागदा** के विनाश का एक सीधा रणनीतिक परिणाम था। यह शोध पत्र 'चीरवा के शिलालेख (1273 ई.)' तथा जयसिंह सूरि कृत 'हम्मीरमदमर्दन' के आधार पर भूताला के युद्ध की सैन्य और कूटनीतिक घटनाओं को पुनर्गठित करता है।

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

1. प्राथमिक अभिलेखीय एवं साहित्यिक स्रोत (Primary Sources)

इतिहास का प्रामाणिक पुनर्गठन केवल समकालीन अभिलेखों के आधार पर ही संभव है। इस घटनाक्रम के दो प्रमुख अकाट्य आधार हैं:

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

1. **चीरवा का शिलालेख (1273 ई. / विक्रम संवत 1330):**

   रावल समरसिंह के शासनकाल में नागदा के समीप उत्कीर्ण यह अभिलेख मेवाड़ के इतिहास की सर्वाधिक प्रामाणिक कड़ी है। यह शिलालेख इल्तुतमिश (तुर्क सेना) द्वारा नागदा पर किए गए आक्रमण, नगर के दहन तथा उसकी रक्षा में मेवाड़ी योद्धाओं के बलिदान का स्पष्ट विवरण देता है।

2. **'हम्मीरमदमर्दन' (जयसिंह सूरि, रचनाकाल: 1220–1230 ई.):**

   यह संस्कृत नाटक इस युद्ध का सबसे निकटतम समकालीन साहित्यिक प्रमाण है। इसमें 'हम्मीर' (अमीर का अपभ्रंश) शब्द सुल्तान इल्तुतमिश के लिए और 'मदमर्दन' का अर्थ उसके सैन्य अहंकार के विनाश के लिए प्रयुक्त हुआ है।

2. नागदा का दहन एवं चित्तौड़गढ़ का रणनीतिक उदय

1220 के दशक में सुल्तान इल्तुतमिश ने राजपूताना पर प्रभुत्व स्थापित करने के उद्देश्य से मेवाड़ पर अचानक भीषण आक्रमण किया।

- **नागदा का विनाश:**

  रावल जैत्रसिंह की मुख्य सेना उस समय संगठित नहीं थी। इल्तुतमिश ने मैदानी क्षेत्र में स्थित मेवाड़ की समृद्ध और प्राचीन राजधानी नागदा को घेरकर पूरी तरह जलाकर भस्म कर दिया।

- **मदन एवं बालक का बलिदान:**

चीरवा शिलालेख के अनुसार, नागदा के 'तलारक्ष' (कोतवाल/नगर रक्षक) **योगराज** के पुत्र **मदन** तथा उनके वीर पुत्र **बालक (बालाक)** ने तुर्क सेना के विरुद्ध नागदा के मुख्य फाटकों पर अंतिम सांस तक युद्ध किया और वीरगति प्राप्त की।

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

- **सत्ता के केंद्र का स्थानांतरण:**

  नागदा के समतल क्षेत्र में स्थित होने के कारण वह भविष्य के भारी घुड़सवार आक्रमणों के लिए असुरक्षित था। इसी रणनीतिक विफलता को देखते हुए रावल जैत्रसिंह ने सत्ता का केंद्र अरावली की पर्वतमाला पर स्थित सुदृढ़ दुर्ग **चित्रकूट (चित्तौड़गढ़)** में स्थाई रूप से स्थानांतरित कर दिया।

3. भूताला का 'गुलिल्ला ट्रैप' एवं सैन्य रणनीति

नागदा के विनाश के पश्चात रावल जैत्रसिंह ने सीधे मैदानी युद्ध के स्थान पर सामरिक रूप से पीछे हटने (Feigned Retreat) का मार्ग चुना।

"सच्ची सैन्य कुशलता शत्रु को उसकी इच्छा के विपरीत प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों में खींचकर पराजित करने में निहित है।"

- **अरावली का दर्रा:**

  जीत के नशे में चूर सुल्तानी सेना मेवाड़ी बलों का पीछा करते हुए नागदा और गोगुंदा के मध्य स्थित '**भूताला की संकरी घाटी**' में प्रवेश कर गई।

- **छापामार प्रहार:**

  भूताला का दर्रा अत्यंत संकरा था, जहाँ तुर्कों की भारी अश्वसेना के लिए मुड़ना या युवरचना बनाना असंभव था। पहाड़ियों पर पहले से तैनात मेवाड़ी छापामार टुकड़ियों एवं स्थानीय भील धनुर्धरों ने ऊपर से पत्थरों व बाणों की भीषण बौछार की, जिससे सुल्तानी सेना में भगदड़ मच गई और वे आपस में ही कुचलकर नष्ट होने लगे।

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

4. वाघेला कूटनीति एवं मनोवैज्ञानिक युद्ध (Psychological Warfare)

'हम्मीरमदमर्दन' के अनुसार, रावल जैत्रसिंह ने इस युद्ध में केवल सैन्य बल का प्रयोग नहीं किया, बल्कि गुजरात के **वाघेला शासक वीरधवल** तथा उनके चतुर मंत्रियों–**वस्तुपाल एवं तेजपाल** के साथ मिलकर एक कूटनीतिक चक्रव्यूह रचा।

इल्तुतमिश के शिविर में यह गुप्त सूचना पहुँचाई गई कि गुजरात की चालुक्य-वाघेला सेना एक विशाल दल के साथ मेवाड़ की सहायता हेतु पीछे से आक्रमण करने आ रही है। आगे अरावली की घाटी में फँसने और पीछे से घिरने के मनोवैज्ञानिक खौफ ने तुर्क सेना के मनोबल को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

5. सुल्तान का पलायन एवं रसद संकट

द्विपक्षीय दबाव और घाटी में हुए भीषण संहार के कारण सुल्तान इल्तुतमिश अपनी बची-कुची सेना के साथ दिल्ली की ओर भाग खड़ा हुआ। पर्वतीय क्षेत्र में रसद सामग्री (Food Supplies) समाप्त हो जाने के कारण, भूख से बेहाल भागती हुई सुल्तानी सेना ने अपने ही नियंत्रण वाले क्षेत्रों (आहड़ व आसपास के गांवों) में लूटपाट की।

💡 निष्कर्ष (Conclusion)

1227 ई. का भूताला का युद्ध केवल एक क्षेत्रीय संघर्ष नहीं था, अपितु यह दिल्ली सल्तनत के अजेय होने के भ्रम का अंत था। नागदा के दहन से उत्पन्न हुई परिस्थितियों ने ही चित्तौड़गढ़ को मेवाड़ की रक्षात्मक और रणनीतिक राजधानी के रूप में स्थापित किया, जो आगे चलकर भारतीय स्वाभिमान का सबसे बड़ा प्रतीक बना।

The Battle of Bhutala (1227 AD) & The Strategic Birth of Chittorgarh: A Primary Epigraphic Reconstruction

🎯 Executive Summary

In conventional historiography, the selection of Chittorgarh as the capital of Mewar is frequently presented as a routine administrative transition. However, analytical evaluation of primary epigraphic records and contemporary manuscripts establishes that Chittorgarh's emergence as the seat of power was a direct strategic response to the destruction of Mewar's ancient capital, **Nagda**, by Sultan Shams-ud-din Iltutmish of Delhi in 1227 AD. This paper reconstructs the military, geographical, and diplomatic dimensions of the Battle of Bhutala based on the **Chirwa Inscription (1273 AD)** and Jayasimha Suri's **Hammiramadamardana**.

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

1. Primary Epigraphic & Textual Foundations

Historical reconstruction requires strict reliance on primary, verifiable sources:

1. **The Chirwa Inscription (1273 AD / VS 1330):**

   Issued during the reign of **Rawal Samarsimha** near Nagda, this stone inscription serves as the most authentic primary record of 13th-century Mewar. It explicitly documents the siege of Nagda by the Turkish forces, the burning of the city, and the casualties sustained by the defenders.

2. **'Hammiramadamardana' (c. 1220–1230 AD):**

   Authored by Jayasimha Suri, this Sanskrit drama represents the closest contemporary literary record. The term *Hammira* denotes Sultan Iltutmish (*Amir*), while *Madamardana* signifies the complete destruction of his military pride.

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

2. The Burning of Nagda & Shift to Chittorgarh

During the 1220s, Sultan Iltutmish executed a rapid invasion into Rajputana to assert Delhi's hegemony over Central Rajasthan.

- **The Fall of Nagda:**

  Rawal Jaitrasimha's primary force was decentralized when the Sultanate cavalry launched a surprise assault. The unfortified plain capital of Nagda was encircled and razed to the ground, destroying centuries of civil and religious architecture.

- **The Martyrdom of Madan & Balak:**

  The Chirwa Inscription explicitly records that **Madan**, son of Nagda's *Talaraksha* (Governor/Constable) **Yogaraja**, alongside his valiant son **Balak (Balarak)**, engaged the Turkish forces at the city gates and laid down their lives in defense of Nagda.

- **Strategic Relocation to Chittorgarh:**

  Recognizing that plain cities like Nagda lacked defensive depth against rapid heavy-cavalry raids, Rawal Jaitrasimha permanently transferred the political capital to the high, fortified plateau of **Chitrakoot (Chittorgarh)**. Thus, Iltutmish's invasion inadvertently laid the foundation for Chittorgarh's golden defensive era.

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

3. The Bhutala Pass & Asymmetric Guerrilla Warfare

Following the destruction of Nagda, Rawal Jaitrasimha avoided a frontal pitched battle in the plains, employing a calculated feigned retreat.

"Superior military leadership relies on converting the enemy's geographic ignorance into their ultimate operational failure."

- **The Terrain Trap:**

  Overconfident from the destruction of Nagda, the Sultanate army pursued the retreating Mewari forces into the **narrow mountain pass of Bhutala**, situated between Nagda and Gogunda.

- **The Guerrilla Assault:**

  The Bhutala pass was geographically constricted, neutralizing the operational maneuverability of the Sultanate's heavy cavalry. Mewari guerrilla units and local Bhil archers stationed along the ridge unleashed heavy stone boulders and arrows, triggering massive panic and internal trampling within the trapped Delhi army.

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

4. Vaghela Diplomacy & Psychological Operations

As documented in *Hammiramadamardana*, Rawal Jaitrasimha integrated military defense with sophisticated intelligence operations. He forged a strategic understanding with **Ruler Veerdhavala** of the Vaghela dynasty of Gujarat and his ministers, **Vastupala and Tejapala**.

Planting false intelligence within the Sultanate's spy network, they spread rumors that a massive Chalukya-Vaghela force was marching from Gujarat to encircle the Delhi army from the rear. Fearing a deadly two-front entrapment within rugged terrain, total operational breakdown occurred in the Sultanate command.

5. Sultanate Retreat & Logistical Collapse

Sustaining heavy casualties in the narrow gorge and paralyzed by psychological fear, Sultan Iltutmish ordered an immediate retreat toward Delhi. Stranded without logistics in the Aravallis, the starving Sultanate troops plundered towns and settlements within their own controlled territories during the retreat, completely destroying their own supply lines.

💡 Conclusion

The Battle of Bhutala (1227 AD) stands as a landmark victory of asymmetric warfare, epigraphically supported by the Chirwa Inscription. The destruction of Nagda irrevocably altered the geopolitical landscape of Western India, establishing Chittorgarh as the fortified citadel of Mewar's sovereignty.

© 14th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).